आर्थिक मदद देना जारी रखेगा भारत

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने श्रीलंकाई राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे और पूर्व प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे के साथ बातचीत में उन्हें आश्वस्त किया कि भारत उनके देश को आर्थिक मदद देना जारी रखेगा। ध्यान रहे, श्रीलंका इन दिनों अभूतपूर्व आर्थिक संकट से गुजर रहा है।

अमन सिंह।।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने तीन दिवसीय श्रीलंका यात्रा के दौरान बिम्सटेक देशों के मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में भी शिरकत की, लेकिन यह दौरा द्विपक्षीय संबंधों के लिहाज से भी खासा महत्वपूर्ण रहा। विदेश मंत्री ने श्रीलंकाई राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे और पूर्व प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे के साथ बातचीत में उन्हें आश्वस्त किया कि भारत उनके देश को आर्थिक मदद देना जारी रखेगा। ध्यान रहे, श्रीलंका इन दिनों अभूतपूर्व आर्थिक संकट से गुजर रहा है। वहां जरूरी वस्तुओं की जबर्दस्त किल्लत हो गई है, खाद्य पदार्थों के दाम आसमान छू रहे हैं।

पेट्रोल–डीजल की कमी का आलम यह है कि पेट्रोल पंपों पर सुरक्षाकर्मी तैनात करने पड़ रहे हैं। विदेशी मुद्रा की कमी के चलते सरकार के लिए पेट्रोल और खाद्य पदार्थों के आयात का भुगतान करना मुश्किल हो गया है। इन सबके पीछे एक बड़ी वजह तो बेशक कोरोना महामारी ही रही। पर्यटन यहां आमदनी का एक बड़ा स्रोत है और महामारी के इस दौर में पर्यटकों का आना लगभग ठप रहा। लेकिन थोड़ी बारीकी से देखें तो समस्या की पृष्ठभूमि महामारी से काफी पहले ही तैयार हो गई थी। 2005 से 2015 के बीच श्रीलंका ने विदेशी कर्ज लेकर इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास की नीति अपनाई। इस दौरान खास तौर पर चीन से बड़े पैमाने पर कर्ज लिए गए और हंबनटोटा मेगा पोर्ट सिटी जैसी बड़ी और खर्चीली परियोजनाएं शुरू की गईं। मगर ये परियोजनाएं उम्मीद के मुताबिक रिटर्न नहीं दे पाईं। नतीजा यह कि श्रीलंका कर्ज के जाल में बुरी तरह फंस गया।

श्रीलंका पर चीन का ही करीब 300 करोड़ डॉलर का कर्ज है। ऐसी स्थिति में कोरोना महामारी का कठिन दौर आ गया। रही–सही कसर यूक्रेन युद्ध ने पूरी कर दी। दिलचस्प बात यह कि चीन भले ही श्रीलंका को तरह–तरह के सब्जबाग दिखाता रहा हो, मौजूदा संकट के दौर में मदद भारत ही कर रहा है। कई रीन्यूएबल एनर्जी प्रॉजेक्ट्स जो पहले चीन को दिए गए थे, उन्हें अब भारत आगे बढ़ा रहा है। पिछले कुछ महीनों में ही भारत उसे करीब 240 करोड़ डॉलर की वित्तीय मदद मुहैया करा चुका है।

भारत की पारंपरिक नीति और दोनों देशों के पुराने करीबी रिश्तों के मद्देनजर संकट काल में इस पड़ोसी देश की हर संभव मदद करना उचित भी है। लेकिन ध्यान में रखने की बात यह है कि इन दिनों श्रीलंका में आंतरिक असंतोष चरम पर है। लोग सरकार की नीतियों से और कोरोना काल की चुनौतियों से निपटने के उसके अंदाज से खासे नाराज हैं। खासकर राजपक्षे परिवार इन असंतुष्ट तत्वों के निशाने पर है। ऐसे में इस बात का विशेष ध्यान रखने की जरूरत है कि भारत की मदद का वहां कोई और मतलब न निकाला जाने लगे। यह बात सबके लिए और हर स्तर पर स्पष्ट रहनी चाहिए कि भारत श्रीलंका के लोगों की मदद कर रहा है, राजपक्षे परिवार की नहीं।

'वेदोखिलो धर्ममुलं'

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। देखो, बाइबिल में सूर्य को पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करना बताया है जबकि वेद कहता है कि पृथ्वी सूर्य के चारों जल सहित घूमती है। इतना ही नहीं विज्ञान का कोई भी क्षेत्र हो, वेदों से नहीं छूटा। अतः जो मत विज्ञान की कसौटी पर खरे नहीं उतरते, वे धर्म भी नहीं है। गीता में श्रीकृष्ण जी कहते है कि 'यतो धर्मस्ततो जयः' अर्थात जहाँ धर्म है वहाँ विजय है आगे आता है कि 'वेदोखिलो धर्ममुलं' अर्थात वेद धर्म का मूल है।

इन दश नियमों का पालन करना धर्म है। यही धर्म के दस लक्षण है। यदि ये गुण या लक्षण किसी भी व्यक्ति में है तो वह धार्मिक है। मनुष्य बिना सिखाये अपने आप कुछ नहीं सीखता है। जबकि ईश्वर ने अन्य जीवों को कुछ स्वाभाविक ज्ञान दिया है जिससे उनका जीवन चल जावे।

संपादकीय

भारत की चिंता करे यूएस

भारत की इकॉनमी पश्चिम केंद्रित हो रही है, जिसकी शुरुआत 1991 के आर्थिक सुधारों से हुई थी। लेकिन भारत के सुरक्षा हितों को लेकर पश्चिम ने कभी खास चिंता नहीं दिखाई। ना ही हथियारों के मामले में उनसे बहुत मदद मिली। यह हाल तब है, जबकि भारत इसके सभी बुनियादी समझौतों में शामिल है। इन सबके बीच अगर आज अमेरिका भारतीय रुख की आलोचना कर रहा है तो उसे ठीक नहीं कहा जा सकता। अमेरिका और भारत को आपसी रिश्तों की गहराई से समीक्षा करनी चाहिए। उसे और मजबूत बनाना चाहिए। भारत को औकस टेक्नॉलजी पार्टनरशिप का हिस्सा बनाकर अमेरिका इसकी शुरुआत कर सकता है। इसके साथ, भारत को भी अमेरिका पर अधिक भरोसा करना होगा। अमेरिका को भी समझना चाहिए कि जब वह अपने दुश्मनों पर सख्ती करता है तो उसकी कीमत भारत को चुकानी पड़ती है। पहले ईरान और अब रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों में यही हो रहा है। अफगानिस्तान से जब अमेरिकी फौज अचानक चली गई तो वह भी भारतीय हितों के मुताबिक ठीक नहीं था। इन मामलों से ना सिर्फ भारत की इकॉनमी को नुकसान हुआ बल्कि सामरिक लिहाज से भी यह ठीक नहीं है। भारत को भी यह देखना चाहिए कि दूसरे देशों के साथ उसके जो रिश्ते हैं, उनसे आने वाले वक्त में उसे कोई परेशानी तो नहीं होगी। भारत को यह बात स्पष्ट करनी होगी कि अंतरराष्ट्रीय मामलों में उसका रुख क्या है और वह किन देशों के साथ सहज महसूस करता है। हम लंबे समय से एक तिराहे पर खड़े हैं। इसे बदलना होगा। यह कहने से काम नहीं चलेगा कि भारत विदेश नीति को लेकर अलग ही लीक पर चलता रहेगा। भारत और अमेरिका दोनों को ही पता है कि असली दुश्मन चीन है।

बाइडन सरकार के डेप्युटी एनएसए (राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार) दलीप सिंह अचानक दिल्ली आ धमके। यहां उन्होंने रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों की जानकारी दी। यह बताया कि उनका भारत पर क्या असर हो सकता है?

यूक्रेन पर नहीं थी तैयारी

इंद्राणी बागची।।

चाइनीज गूंगे–बहरे भी हो सकते हैं। तभी तो चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने अपनी हालिया यात्रा के दौरान पाकिस्तान और भारत में जो बयान दिए, उसमें जमीन–आसमान का फर्क था। पाकिस्तान में जहां उन्होंने इस्लामिक देशों के संगठन के कश्मीर पर दिए बयान से सहमति जताई वहीं भारतीय प्रतिनिधियों से बातचीत में कहा कि सीमा विवाद को फिलहाल भुला देना ही ठीक होगा। अमेरिका ने भी इधर चीन जैसी ही एक गलती की। बाइडन सरकार के डेप्युटी एनएसए (राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार) दलीप सिंह अचानक दिल्ली आ धमके। यहां उन्होंने रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों की जानकारी दी। यह बताया कि उनका भारत पर क्या असर हो सकता है? लगे हाथ यह भी कह गए कि अगर भारत ने रूस के साथ व्यापार नहीं घटाया तो उसका अंजाम भुगतना पड़ेगा। दलीप सिंह के इस बयान से हाल के हफ्तों में दोनों देशों की ओर से रिश्तों में बेहतरी की जो कोशिश हुई थी, उस पर पानी फिर गया।

यह बात सही है कि रूस–यूक्रेन युद्ध कोई भारत की जंग नहीं है, लेकिन सच यह भी है कि इसे लेकर भारतीय पक्ष पूरी तरह से तैयार नहीं था। अब अगर यूक्रेन पर हमले से पहले व्लादिमार पुतिन की बयानबाजी को देखें तो उससे बहुत

सारे संकेत मिल रहे थे। पुतिन ने कहा था कि यूक्रेन का अलग राष्ट्र के रूप में वजूद उन्हें मंजूर नहीं है। पुतिन ने यह भी कहा कि नैटो यूक्रेन के जरिये रूस की दहलीज तक पहुंचने की तैयारी कर रहा है। तब कई देशों को लग रहा था कि यूक्रेन की सीमा पर रूस अपनी फौज इसलिए इकट्ठी कर रहा है क्योंकि वह इसके जरिये नैटो के साथ अपने फायदे के लिए सौदेबाजी करना चाहता है।

भारत संयुक्त राष्ट्र में इस युद्ध को लेकर लाए गए 12 प्रस्तावों पर वोटिंग से बाहर रहा है, लेकिन यह भी सच है कि इस बीच उसके रुख में काफी बदलाव आया है। उसकी वजह यह है कि इस बीच रूस ने यूक्रेन में जो किया है, उसे सही ठहराना मुश्किल हो गया है। पिछले गुरुवार को भारत ने संयुक्त राष्ट्र में लाए जिस प्रस्ताव पर वोटिंग से बाहर रहने का फैसला किया, वह एक तरह से रूस का विरोध था। यूक्रेन में रूस की कार्रवाई से भारत नाराज है। पिछले हफ्ते जब रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव भारत आए थे, तब उन्हें इस बारे में बताया गया। यही वजह थी कि जो लावरोव आमतौर पर क्वाड और हिंद–प्रशांत पर बयानबाजी करते रहते हैं, वह इस यात्रा में इन मुद्दों को लेकर कुछ नहीं बोले।

युद्ध की वजह से रूस के साथ हथियारों, खाद, हीरों और तेल–गैस का व्यापार भी प्रभावित हो सकता है। उसकी वजह यह है कि इनकी ढुलाई के लिए अंतरराष्ट्रीय इंश्योरेंस नहीं मिलने से ये सौदे कामयाब नहीं रह जाएंगे। अगर आप प्रतिबंधों को लेकर रूस और पश्चिमी देशों की बयानबाजी को रहने भी दें तो मार्केट फोर्सेज की वजह से इस तरह से सौदे पूरे नहीं किए जा सकेंगे। ऐसा ईरान और वेनेजुएला के मामले में दुनिया पहले ही देख चुकी है। सच पूछिए तो रूस के युद्ध के लिए पैसा आज यूरोप और चीन के साथ किए जा रहे सौदों से आ रहा है। इस साल भारत की रूस से तेल–गैस की खरीदारी उसकी कुल जरूरत के 2 फीसदी तक भी नहीं पहुंचेगी, जबकि अमेरिका के साथ इसके 11 फीसदी तक पहुंचने की उम्मीद है। यहां एक यह सवाल उठता है कि यूक्रेन पर रूस के हमले को लेकर भारत–अमेरिका के रिश्तों पर कितना असर हुआ है?

अष्टयोग-4946

	2				6	
3	24	6	37	2	32	
						3
5	33	1	29	4	30	
7		5	4			2
	38	4	31	3	29	
4		7			2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4945 का हल

7	1	3	4	6	5	2
4	38	6	34	2	32	7
6	4	7	1	5	2	3
5	29	1	33	4	36	6
3	1	2	6	7	4	5
1	24	4	35	3	28	1
2	6	5	7	1	3	4

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

अनचाहे अनुशासन की मर्यादा टूट जाती

मोहन। भारतीय सिने जगत में मुसलमानों का ही दबदबा रहा है, क्या वो सारे मुसलमान इस्लाम विरोधी हैं? क्या किसी खान या नसीरूद्दीन शाह ने जायरा का प्रतिकार किया कि उसने ऐक्टिंग का करियर छोड़ने के लिए इस्लाम की आड़ क्यों ली? ऐसा संभव ही नहीं है। दरअसल, उदावरादियों की नजर में ऐसी उम्मीद करने वाला ही गुनहगार और सांप्रदायिक है। इसलिए, हिंदुओं में अकुलाहट है। वह प्रतिकार करना चाहता है। यह सच है कि बड़े से बड़े अनुशासित समाज, संप्रदाय, समूह या व्यक्ति से भी कभी ना कभी अनचाहे अनुशासन की मर्यादा टूट जाती है जब उसका सामना घोर अराजक, अमानवीय विचारों से होता रहे। आज हिंदुओं के साथ यही हो रहा है। इस समाज का एकाध व्यक्ति या समूह मुसलमानों का प्रतिकार करते–करते अनुशासन की सीमारेखा कब पार कर जा रहा है, उसे शायद पता ही नहीं। तब कहा जाता है कि हिंदू तो बहुत कट्टर है।